रिकॉर्डः–छोड़ भी दे अकाश सिंहासन..... ॐ पिताश्री 9/8/1964
ओमशांति। बच्चों ने गीत सुना। याद करते हैं– हे प०पि०प० निराकार रूप बदल कर साकार में आ जाओ और क्या रूप बदलेगा? ऐसे तो नहीं कहेंगे, कच्छ–मच्छ का रूप बनकर आओ। नहीं। यह है पापात्माओं की दुनिया। पुकारते हैं पावन बनने लिए। अगर सर्वव्यापी है तो फिर किसको पुकारते हैं। अब यह गीत तो रेडिओ में भी बजते हैं; परन्तु कोई भी समझते नहीं; इसलिए इस दुनिया को जानवरों से भी बदतर कहा जाता है। जानवरों में भी जो बदतर जानवर हैं उनको कहा जाता है बन्दर; क्योंकि उनमें सब जानवरों से जास्ती विकार होते हैं। बन्दर की ही शिकल बनाते हैं– हियर नो ईविल, सी नो ईविल..... अब जानवरों को तो नहीं समझाया जाता। समझाना तो मनुष्य को होता है; परन्तु मनुष्य भी इस समय बन्दर से भी बदतर बन पड़े हैं। उनको ही भ्रष्टाचार कहा जाता है। अब तुम बच्चियाँ तो अख़बार आदि पढ़ती नहीं। भल पढ़ी–लिखी हैं; परन्तु अख़बार पढ़ने का शौक नहीं। बाकी रहे गोप, उनमें भी कोई–2 को सर्विस का शौक रहता है– किस रीति अख़बार से सर्विस का रास्ता निकाले। ब्राह्मण कुल भूषण हैं तो भल बहुत; परन्तु उनमें भी कोटों में कोऊ, कोऊ में भी कोऊ निकलते हैं जो अख़बार में देख और फौरन सर्विस करने लग पड़ते हैं। बाबा ने राइट हैण्ड बनाया है माताओं को। वो इन बातों से जानते नहीं। लेफ्ट हैण्ड गोप मुश्किल खड़े होते हैं। कोई विरला यथार्थ रीति श्रीमत पर अटेंशन देते हैं। यह एक (प्वाइंट) है भ्रष्टाचार और श्रेष्ठाचार की। भ्रष्टाचारी बुलाते हैं कि हे भगवान आओ, आकर श्रेष्ठाचारी बनाओ। सभी साधू–संत आदि बुलाते हैं। सभी भ्रष्टाचारी ज़रूर हैं। कहा जाता है– यथा राजा–रानी तथा प्रजा। यथा राजा माना गवर्मेंट और तथा प्रजा माना रइयत। तो बच्चों को समझाया गया है भारत सदा श्रेष्ठाचारी था, स्वर्ग था। स्वर्ग में भी

अगर भ्रष्टाचारी हो तो उनको स्वर्ग ही कैसे कहा जाय! स्वर्ग की स्थापना ज़रूर बाप ही करते होंगे, जिसको ही याद करते हैं। भ्रष्टाचारी (ही) बुलाते हैं, श्रेष्ठाचारी कब बुलाते नहीं। भारत बड़ा श्रेष्ठाचारी था, स्वर्ग था। अभी तो नर्क है। तो नर्क में ज़रूर भ्रष्टाचारी होंगे। कोई कहे, भ्रष्टाचारी–श्रेष्टाचारी का सबूत दिखाओ। तुम चित्र दिखला सकते हो। बरोबर सतयुग में यथा राजा–रानी तथा प्रजा। यह ल०ना० देखो, श्रेष्ठाचारी थे ना। नाम ही है स्वर्ग। द्वापर में ऐसे श्रेष्ठाचारी राजा–रानियों के मंदिर बनाय पूजा करते हैं तो ज़रूर खुद भ्रष्टाचारी हैं। अपन को कहते भी हैं– हम भ्रष्टाचारी हैं। कामी–क्रोधी–पापी हैं। आप सर्वगुण सम्पन्न... हैं। भ्रष्टाचारी–श्रेष्टाचारियों की महिमा करते हैं भारत में। भ्रष्टाचारी राजाओं सबके पास श्रेष्ठाचारी देवताओं के मंदिर हैं। महिमा गाते रहते हैं। नमन, वन्दन, पूजा करते हैं। बाप समझाते हैं सन्यासी भी कुछ न कुछ श्रेष्ठाचारी हैं, जो भ्रष्टाचारी उनको अपना गुरु बनाते हैं श्रेष्टाचारी बनने के लिए; परन्तु जब तक खुद भी सन्यास न करे तब तक बन नहीं सकते। बाबा ने समझाया है धर्म स्थापन करने अर्थ ऊपर से जो आत्माएँ आती हैं वो ज़रूर सतोप्रधान, श्रेष्टाचारी होंगी। भल माया का राज्य है; परन्तु पहले आने वाले ज़रूर सतोप्रधान होंगे, तब तो उनकी महिमा होती है। फिर सतो–रजो–तमो में आते हैं। देवताएँ भी श्रेष्ठाचारी थे। अभी भ्रष्टाचारी हो गए हैं। हर एक को सतो–रजो–तमो में आना ही है। भ्रष्टाचारी बनना ही है। बाप बैठ समझाते हैं, कैसे भ्रष्टाचारी बनते हैं। सन्यासी भी पहले श्रेष्ठाचारी थे फिर भ्रष्टाचारी बनते हैं। तो पहले वो श्रेष्ठाचारी होने कारण उन्हों का (शो) हो जाता है। यह बातें कोई नहीं जानते हैं। अख़बार में पड़ता है (कई संस्थाएँ) हैं जो भ्रष्टाचार को बन्द करने का पुरुषार्थ करते हैं। अब श्रेष्टाचारी आवे कहाँ से जो भ्रष्टाचार को बन्द करे। द्वापर से लेकर राजाएँ लोग श्रेष्ठाचारी देवताओं के मंदिर बनाय पूजा करते आ(ए) हैं। वो खुद ही अपना भ्रष्टाचारी पना दिखाते हैं। जो श्रेष्ठाचारी राजा–रानी थे उन्हों को फिर (रजो)–तमो में आना ही है। भ्रष्टाचारी बनना ही है ज़रूर। आप ही पूज्य श्रेष्टाचारी, फिर आप ही पूज्य भ्रष्टाचारी बनते हैं। फिर पूज्य देवी–देवताओं की बैठ पूजा करते हैं। अभी तुम यह लिख सकते हो कि यथा राजा–रानी तथा प्रजा सतयुग में श्रेष्ठाचारी थे। वाइसलेस वर्ल्ड थी। बाद में फिर कलाएँ कम होती हैं। भारत को नीचे आना ही है। यह खेल ही भारत पर है। आधा कल्प भारत सदा श्रेष्ठाचारी था। सदा एकरस भी नहीं रहते। 16 कला से 14 कला में तो आना ही है। भ्रष्टाचारी बनते हैं तो और ही कलाएँ कमती होती जाती हैं। तमोप्रधान बन पड़ते हैं। भ्रष्टाचार भी सतोप्रधान, सतो–रजो–तमो होता है। जैसे माया भी पहले सतोप्रधान फिर सतो–रजो–तमोप्रधान होते हैं। अभी तमोप्रधान है। भेंट करनी पड़ती है। बाप समझाते हैं यथा राजा–रानी तथा प्रजा सभी भ्रष्टाचारी हैं। अब स..... बनाते हैं कि हम श्रेष्ठाचारी बनावें; परन्तु यह तो है ही भ्रष्टाचारियों की सृष्टि, तो श्रेष्ठाचारी कहाँ से आवें! सतयुग में जो श्रेष्ठाचारी थे, शास्त्रों में उन्हों को भी भ्रष्टाचारी बना दिया है। पहले–2 भ्रष्टाचारी बनाया है प०पि०प० शिव को। पत्थर–ठिक्कर में डाल एकदम खतम कर दिया है। एक आर्य समाजी ने कहा टट्टी में भी परमात्मा है। तो यह कितना भ्रष्टाचार हुआ! कितनी निन्दा करते हैं। बाप खुद कहते हैं सबसे जास्ती मेरे को भ्रष्टाचारी बनाया है। 84 लाख (यो)नि मेरी ब(ताय) देते हैं। (मेरे) को कण–2 में डाल दिया है। जैसी दृष्टि वैसे सृष्टि। सतयुग को भी ऐसा समझते हैं। ग्लानि कर वर्थ नोट ए पैनी बन पड़ते हैं। अच्छा, फिर आओ ब्र०वि०शं० पर। ब्रह्मा के लिए कहते, सरस्वती पर फिदा...., शंकर पार्वती पर फिदा हुआ, विष्णु के दो रूप राधे–कृष्ण, उन्हों की भी ग्लानि कर दी है। कृष्ण को भ्रष्टाचारी बनाय दिया है। कहते उनको 16108 रानियाँ थीं, बहुत बच्चे थे। यह सब ..... (लि)ख दी है। अगर श्री कृष्ण ऐसा भ्रष्टाचारी था तो फिर तुम श्री कृष्ण भगवानुवाच

कैसे कहते हो? वो कैसे पतितों को पावन बनावेगा, जबकि उनको सबसे जास्ती पतित दिखाते हैं। शास्त्र बनाने वाले कितने भ्रष्टाचारी ठहरे। शिव की, ब्र०वि०शं० की, राधे–कृष्ण की, सबकी ग्लानि लिख दी है। फिर राम के लिए कहते, राम की स्त्री चुराई गई..... । वहाँ भी भ्रष्टाचार दिखा दिया है। बाप कहते हैं– क्या मैं भ्रष्टाचारी सृष्टि ही रचयिता हूँ? तब स्वर्ग कहाँ होता है! कुछ भी समझते नहीं। बिलकुल ही चट खाते में हैं। तो समझाना चाहिए ना। बाबा भारतवासियों को समझाते हैं कि यह सबके लिए नॉलेज है। यथा गवर्मेन्ट भ्रष्टाचारी तथा सब। खुद ही कहते हैं सभी भ्रष्टाचारी, करप्टिव हैं। अभी श्रेष्टाचार किसको कहें? साधु–सन्यासी भी पहले अच्छे थे, जो कहते थे ईश्वर और उनकी रचना बेअन्त हैं। अभी तो कह देते, शिवोऽहम, सभी ईश्वर ही ईश्वर हैं। इसलिए बाप कहते हैं– जब–2 अती भ्रष्टाचार होता है तब मैं आता हूँ। पतित को भ्रष्टाचारी, पावन को श्रेष्ठाचारी कहेंगे। यह तो बिल्कुल समझ की बात है। माया ने सबको बेसमझ बना दिया है। श्रीमत भगवत कहा जाता है। श्रीमत क्या करते थे? वो तो श्रेष्ठ राजाओं का राजा बनाते थे। कहते थे, इन माया पर जीत पहनो तो तुम प्रिन्स–प्रिन्सेज बनोगे। श्री कृष्ण ऐसा मर्यादा पुरुषोत्तम उनको फिर 16108 रानियाँ होंगी! कितनी भारत की निंदा कराते हैं। कुछ बुद्धि से समझना भी तो चाहिए। श्री कृष्ण प्रिंस, जो फिर राजा बनता है, उनको इतनी 16108 रानियाँ तो प्रजा को कितनी होंगी। बाप अ(च्छी) रीति बैठ समझाते हैं। इसमें डरने की कोई बात नहीं। य(ह) तो सच्ची बात है। जैसा राजा–रानी वैसी प्रजा होती है। राजा पूज्य तो प्रजा भी पूज्य थी। तो यह भेंट देनी है। क्राइस्ट से 3000 बरस पहले भारत 16 कला सम्पूर्ण, श्रेष्ठाचारी था। भारत सोने की झिड़की थी। यथा राजा–रानी तथा प्रजा स्वर्ग में सदा सुखी थे। फिर (जब)से रावण राज्य शुरू हुआ है (वो) भ्रष्टाचारी बनने लगे हैं। देवी–देवताएँ भी तमोप्रधान बन पड़ते। वैसे ही सन्यासी आदि भी तमोप्रधान तो बनेंगे ना। अभी तो देखो माताओं के गुरु बन बैठे हैं। माताएँ उन्हों के पैर धोकर पीती है। तो दिल अंदर गुस्सा आना चाहिए, स्त्री को सुहाग के बदली डुहाग दे देते। यह तो महापाप है। भ्रष्टाचारी कहेंगे ना! अच्छे–2 राजाएँ घरबार छोड़ जाते हैं, फिर रानियाँ क्या करेंगी? बहुत गंद हो जाता है। पटियाला के राजा को 60 रानियाँ थीं। फिर राजा ने सबको निकाल दिया, रानियाँ कहाँ जाएँ? ज्ञान तो है नहीं। तो ज़रूर गंदी होंगी। तो यह भ्रष्टाचार कहेंगे ना। गवर्मेंट भी जानती है हमारे ऑफीसर्स भ्रष्टाचारी हैं, बहुत रिश्वत लेते हैं, एडल्ट्रेशन करते हैं। धर्म की कितनी ग्लानि कर दी है। भारत 100% श्रेष्ठाचारी था। अभी वो ही भारत जड़जड़ीभूत, तमोप्रधान होने कारण 100% भ्रष्टाचारी है। इसमें सब आ जाते हैं। इस रीति अख़बार में कोई डाले, गवर्मेन्ट कुछ कर नहीं सकती। खुद ही कहते हैं– भ्रष्टाचार है, हमारे ऑफीसर्स में भी भ्रष्टाचार है। राजा–रानी तो हैं नहीं जो कहें प्रजा में है। यहाँ तो है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य। नम्बरवन से लेकर सब भ्रष्टाचारी हैं। पहले तो श्रेष्ठाचारी गवर्मेन्ट बननी चाहिए। उनको कौन बनावें? अब तुम गरीब आबाद बच्चियाँ ही नम्बरवन श्रेष्ठाचारी बन रहे हो। बाप कहते हैं– इन साधुओं आदि सबको श्रेष्ठाचारी आय बनाता हूँ। अब तुम बी०के० सिद्ध कर बतलाती हो, सबसे जास्ती भ्रष्टाचारी कौन है। शास्त्रों में कितनी ग्लानि बैठ लिखी है। ऐसे नहीं कि द्वापर से ही शास्त्र शुरू होते हैं। नहीं। बाद में बनते हैं। पहले तो चित्र बनते फिर उनकी जीवन कहानी बनाते हैं। पहले चित्र बनावे तब फिर शास्त्र बनावे। टाइम लगता है। दो/पाँच सौ बरस बाद में बैठ शास्त्र बनाय है। ड्रामा अनुसार फिर भी ऐसे ही बनेंगे। कारण तो चाहिए ना कि भारत क्यों गिरा। (कार)ण यही है। ऐसे नहीं कि व्यास भगवान ने शास्त्र बैठ लिखे। यह तो मनुष्यों ने ही

.....

लिखे हैं। पास्ट की कहानी बैठ लिखते हैं। वो कोई एक्यूरेट थोड़े ही हो सकती। बाबा ने अभी ज्ञान दिया, अभी पार्ट चला (सो) 2500 बरस बाद क्या लिख सकेंगे। 3000 वर्ष बाद बैठ हिस्ट्री लिखी उनको क्या पता। तो जैसे नाटक बैठ बनाते हैं, वैसे कोई ने बैठ लिखा, लड़ाई लगी इत्यादि। ड्रामा अनुसार ये बना हुआ है। फिर भी वहाँ झूठी गीता, झूठी चित्र निकलेंगे। अब बंगाल में काली का मंदिर है ''काली माँ–2'' कह प्रण (त)जते हैं। अब ऐसी काली आई कहाँ से वा चंडिका देवी, नाम तो देखो कैसा है! जो आश्चर्यवत् भागन्ति होते वे तो प्रजा में चंडाल बनेंगे; परन्तु जो यहाँ रह बहुत शैतानी, चोरी–चकारी आदि करते हैं तो वो रॉयल घराने के चंडाल बनते हैं। फिर भी पिछाड़ी में उनको ताज–पतलून मिल जाती है। .... यहाँ गोद तो लेते हैं ना। इसलिए चड़िका देवी की पूजा होती है। बातें बहुत वंडरफुल है; परन्तु कोई धारण भी करे। जैसे कोई बैरिस्टर तो एक केस का एक ही दिन में लाख रुपया कमाते हैं। कोई का तो कोट (भी फटा) रहता है। बाबा को सब अनुभव है। अब ये पढ़ाई है बेहद की। बा(बा) ने तो बहुत अच्छा समझाया। इसको ..... 5 मिनट का भाषण बनाय कोई अख़बार में ....। भल गवर्मेन्ट ..... बैठे ऊपर केस करे। फिर बहुत मज़ा होगा। अब बाप आकर भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। इसमें बड़ा माथा फिराना चाहिए। कांग्रेस के माथे फिरे हुए थे ना। यहाँ तो कोई जेल आदि नहीं मिलेगा। बाबा ऐसी राय ही नहीं देंगे जो कुछ क(ह) सके। यह तो सच्ची बात है ना। बाबा भी बुद्धिवानों की बुद्धि है ना। तो यह बनाना चाहिए, भ्रष्टाचारी किसने बनाया? शास्त्र किसने खण्डन किए? और धर्मों के शास्त्र खण्डन नहीं हो सकते। पूछो, हिन्दू धर्म किसने स्थापन किया? ..... कुछ नहीं जानते। शक्तियों की चलन ऐसी होनी चाहिए जैसे डेल चलती है। मुख से बात ऐसी करनी चाहिए जो रत्न निकलते रहें। (नो) पत्थर। वो सब पत्थर मारेंगे। तुम पत्थर न मारो। नाम बदनाम न करो। आपस में बहुत लून–पानी हो पड़ते हैं, बाबा कहते हैं ऐसे पद भ्रष्ट हो पड़ेंगे, चण्डाल का जन्म जाकर पावेंगे। अच्छा, मात–पिता, बापदादा का सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ